मुक्तिबोध और समशील तेलुगु रचनाकार

पेरिसेट्टि श्रीनिवासराव

పేరిశెట్టి శ్రీనివాసరావు

ముక్తిబోధ్ ఔర్ సమశీల్ తెలుగు రచనాకార్

అక్షర

Proceedings of the National Seminar(Hindi-Telugu)2017
Organised by:
Akshara saahiti sanskritik sewa peetham,Rajahmundry(regd)
With the financial assistance of
Dept of Language &Culture,Govt.,of AP.,

ISBN : 978 - 93 - 80693 - 96 - 5

अक्षरा साहिती सांस्कृतिक सेवा पीठम्,
राजमंड्री - 533103(आं.प्र.)
की ओर से
दुव्वूरी पब्लिकेशन्स्
मेइन रोड,मचिलीपट्टणम (आं.प्र.) Cell : 8897571706
Email : duvvuripublications@gmail.com
द्वारा प्रकाशित

On behalf of Akshara SSS Peetham, Rajahmundry
Off : # 31-4-23, Flat No. 202, Sairam Residency,
G.P. Rao Street, Maruthinagar, Vijayawada - 520 004. (AP) India
Published by :
DUVVURI PUBLICATIONS
Main Road, Machilipatnam (AP) Cell : 8897571706
Email : duvvuripublications@gmail.com

© संपादक

प्रथम संस्करण : 2019

प्रतियाँ : 500

मूल्य : ₹ 495/- (चार सौ पंचानवे रुपए मात्र)

आवरण : अ.गिरिधर

कंप्यूटर कम्पोजिंग : Sahasra Graphics, Eluru Road, Vijayawada

मुद्रक : नागेन्द्रा प्रिन्टरस्, गाँदिनगर् विजयवाडा - **520 002.**

प्राप्ति स्थल : श्रीमति के.वी.सीता देवी, विजयवाडा - **520 004.**
सहस्त्रा बुक्स् विजयवाड़ा

For Copies :
Smt. K.V. Seetha Devi,
W/o Dr. Perisetti Srinivasa Rao,
31-4-23, Flat No. 202, Sairam Residency,
G.P. Rao Street, Maruthinagar, Vijayawada - 520 004. (AP) India
E.mail : srperisetti@gmail.com
Mobile : 9989242343, 9989546743

अनुक्रम / అనుక్రమణిక

ముందుమాట

संपादकीय

1. बहुत कुछ सीखना है मुक्तिबोध से - हरि राम मीणा 1
2. खतरे में अभिव्यक्ति - रंजना अरगडे 14
3. फासीवादी दस्तक का दस्तावेज : अंधेरे में - रामप्रकाश 24
4. मुक्तिबोध का आलोचनागत अवदान - मृदुला शुक्ल 34
5. मुक्तिबोध के संदर्भ में रामविलास शर्मा के पूर्वग्रह - जे.आत्माराम 42
6. मुक्तिबोध की आलोचना में संवेदनात्मक ज्ञान - हरि रामप्रसाद पसुपुलेटी 51
7. मुक्तिबोध का परम्परा बोध 'एक अन्तर्कथा' के आइने से - प्यारा सिंह 54
8. मुक्तिबोध के साहित्य में व्यक्ति - सूर्यकांत त्रिपाठी 58
9. मुक्तिबोध की कविता 'तुम लोगों से दूर':एक विश्लेषण - सरोज सिंह 65
10. प्रगतिशील काव्य धारा और मुक्तिबोध - टी.सुमती 68
11. मुक्तिबोध की कविताएँ : एक विश्लेषण - पी.वी.डी.श्रीदेवी 72
12. मुक्तिबोध के काव्य में व्यक्त यथार्थ - बिभा कुमारी 77
13. नूतन प्रतीकों का जीवन्त दस्तावेजः चाँद का मुँह टेढ़ा है - रचना 84
14. मुक्तिबोध के काव्यों में सामाजिक चित्रण - पी.आर.वासुदेवन शेष 91
15. मुक्तिबोध की रचनाओं में सामाजिक यथार्थ - कोडगावे किशन 97
16. मुक्तिबोध की कविताओं में यथार्थबोध - सीहेच.वी.महालक्ष्मी 100
17. मुक्तिबोध के काव्य में समाज बोध - के. श्याम सुंदर 105
18. मुक्तिबोध की कविता में व्यंग्य की प्रासंगिकता - वर्षारानी सहदेव 109
19. समाजवादी कवि 'मुक्तिबोध' - करि.सुधा 118
20. मुक्तिबोध की कविताओं में समाज *('अंधेरे में' कविता के संदर्भ में)* - पोलानी सुरेश 122
21. मुक्तिबोध की कविताओं में चेतना दृष्टि - आदिनारायण बादावत 126
22. मुक्तिबोध की कविता में जीवन दृष्टि - के.रेणुका 128
23. मुक्तिबोध की कविताओं में आत्मसंघर्ष - पी.तिरुपतम्मा 132
24. हिन्दी साहित्य में मुक्तिबोध का महत्व - जे.सेन्दामरै 136
25. मुक्तिबोध काव्य - जिन्दगी की कोख में जन्मा नया इस्पात - फैन्टेसी का रूप - वेदुला रमा पद्मजा 139

8

मुक्तिबोध के साहित्य में व्यक्ति

- सूर्यकांत त्रिपाठी

समाज की सबसे लघुतम इकाई है व्यक्ति । दोनों अपने विकास के लिए परस्पर एक दूसरे पर निर्भर है । सामाजिक विकास व्यक्ति की क्षमताओं पर आश्रित है जबकि व्यक्ति की क्षमताओं की वृद्धि में सामाजिक परिस्थितियों का महत् योगदान होता है । एक बदलता हुआ समाज व्यक्ति को नये सामाजिक संबंध का निर्माण करने तथा बदलाव के प्रति प्रतिक्रियात्मक रूप धारण करने के लिए विवश करता है । इसी सिलसिले में व्यक्ति में नये-नये गुणों का विकास होता है और यही गुण उसके व्यक्तित्व के निर्माण के आधार बनते हैं । इस प्रकार हम देखते हैं कि व्यक्ति का व्यक्तित्व ही समाज में उसकी एक पृथक पहचान निर्मित करता है । व्यक्तित्व के दो रूप देखे जाते हैं - प्रथम वह जो समाज के लिए समर्पित होता है और द्वितीय वह जो सामाजिक हित को ठुकराकर मात्र वैयक्तिक हितों को महत्व प्रदान करता है । दूसरे प्रकार के व्यक्तित्व वालों को व्यक्तिवादी जैसी संज्ञा प्रदान की जाती है । उक्त दोनों के अतिरिक्त भी ऐसे प्रकार के व्यक्तित्व वाले व्यक्ति होते हैं जो वैयक्तिक और सामाजिक हित को बराबर महत्व देते हैं । इनकी दृष्टि में वैयक्तिक हित अप्रत्यक्षतः सामाजिक हित का ही पूरक होता है । ये जिन वैयक्तिक हितों के पक्षधर होते हैं । वे हित सही मानी में आधुनिक समाज के निर्माण को साकार करने में व्यक्ति के संघर्ष में सहायक होते हैं । ये ऐसे समाज के विरोधी होते हैं जो व्यक्ति को जड़ बना देता है और इनका विश्वास होता है कि सामाजिक विकास की संभावनाएँ व्यकित की चेतना को बचाए रखने से ही संभव है । इस प्रकार ये हित वैयक्तिकता की रक्षा पर बल देते हैं । अपने परिवेश के प्रति सजगता, परिवेश में होने वाले परिवर्तनों की अनुभूति और उसके प्रति प्रतिक्रिया देने की विशिष्टता ही व्यक्ति की वैयक्तिता है । वैयक्तिता पर जब स्वार्थ प्रभावित हो जाता है और वह 'स्व' की परिधि में फँसकर आग्रही बन जाता है तब वह वैयक्तिता से व्यक्तिवादिता में बदल जाता है ।

पूँजीवाद ने पहली बार समाज में व्यक्ति को पृथक पहचान दी । इसकी वजह से व्यक्ति के निजी अनुभवों तथा उसकी महत्वाकांक्षाओं को भी प्रमुखता प्राप्त हुई । समाज में व्यक्ति को महत्व मिलने की वास्तविकता छायावादी युग की रचनाओं में